Mahaveerdass.

Atha ram Sara Sangraha.

* श्रीगणेशाय नमः *

अथ राम सार संग्रह ।

(महाबीरदास जी कृत)

वेद-वेदान्त संहिता महारामायण तथा भाषा रामायण भक्त-
माल बिश्राम सागर ज्ञान गुदरी वेदार्थ तत्व वोध इत्यादि
प्रमाण संग्रह श्रीभगवत् संबन्धियों के नाम रूप
दृढ़ता के लिये अत्यन्त सुगमताके साथ
दोहा चौपाई द्वारा सर्व सज्ज्नों
के अवलोकन करने
योग्य है ।

हरि ॐ परमात्मने नमः ।

ॐआग्नेयः कृष्णग्रीवः सारस्वती मेषी बभ्रुवः सौम्यः पौष्णः श्यामः शितिपृष्ठोबार्हस्पत्यः शिल्पो व्वैश्वदेवऽऐन्द्रोरुणो मारुतःकल्माषऽऐन्द्राग्नयः सꣳहितोधोरामः सावित्रोवारुणः कृष्णऽएक शिति पात्येत्व ॥ १ ॥

॥ इति यजुर्वेद के उत्तरार्द्धमें अध्याय ॥ २२ ॥

ॐ यस्यांशे नैव ब्रह्माविष्णु महेश्वरापि जातो महाविष्णु यस्य दिव्य गुणश्चएकं कार्यकारणयोपरः सपरम परुषो रामो दाशरथिं बभूवः ॥ २ ॥

॥ इति अर्थवणवेद के उत्तरार्द्धमें ॥

कल्यानानां निधानं कलिमल मथनं पावनं पावनानां
पाथेयं यन्मुमुक्षो सपदि परपद प्राप्तये प्रस्थि तस्य।
विश्रामस्थानमेकं कविवर बचसां जीवनं सज्जनां
वीजं धर्मद्रुमस्य प्रभवतु भवतां भूतये रामनाम ॥ ३ ॥

॥ इति श्रीहनुमान नाटक वेदान्तमे श्लोक ॥

यत्परंयद्गुणातीतं, यज्ज्योतिरमलं शिवम् । तदेवपरमं तत्त्वं, कैवल्यपद कारणम् ॥ ४ ॥ श्रीरामेतिपरं जाप्यं, तारकं ब्रह्मसंज्ञकम् । ब्रह्महत्यादि पापघ्नि, मितिवेदविदोविदुः ॥ ५ ॥ श्रीरामरामेति जना, येजपन्ति च सर्वदा । तेषां भुक्तिश्च मुक्तिश्च, भविष्यति न संशयः ॥६॥ ॥ इति श्रीसनत कुमार संहितायां वेदव्यास वचनं ॥

रामनामसमुत्पन्नः, प्रणवं मोक्षदायकम् । आत्मतेषां सर्वेषां च राम नाम प्रकाशकम् ॥ ७ ॥ निर्बंणं रामनामेदं, केवलश्च स्वराधिपम् । छत्रमुकुटं सर्वेषां, रेफबिन्दुर्द्ध अक्षरम् ॥ ८ ॥ रकार गुरु शकारस् तथा वर्णविपर्य्ययः । मकार व्यंजनश्चैव, प्रणवं चाभिधीयते ॥ ६ ॥ रामित्यानेनवीजेन, ब्रह्ममायाहि चेतनाम् । बदन्तिवेदशास्त्राणि, सिद्धिसिद्धान्तपारगाः ॥१०॥

॥ इति श्रीमहारामायणेप्रमाण समाप्तः ॥



दोहा—सुमिरो सीता राम गुरु, शीश नाय कर जोरि।
बुधजन सज्जन साधु प्रति, बिनय दण्डवत मोरि ॥१॥

करहु सहाय संत उपकारी ❁ पर हितकारन जे तनुधारी ॥
भये महामुनि जे संसारा ❁ राम नाम सिद्धान्त बिचारा ॥
बेद बेदान्त शास्त्र समुदाई ❁ उत्तम राम नाम दरसाई ॥
और अनेक संत की कथनी ❁ मथिके कहे बिचार कि मथनी ॥
कहे सूत शौनक प्रति बानी ❁ सनकादिक मुनि व्यास बखानी ॥
याज्ञबल्कि बशिस्ट मुनि भाखा ❁ नारद बालमीक कहि राखा ॥
कहे कृष्ण अर्जुन समुझाई ❁ नारायण लक्ष्मी प्रति गाई ॥
शंकर राम रूप अनुरागी ❁ कहे बचन गिरिजा हित लागी ॥
राम नाम सम तत्व न आना ❁ बेद सार सिद्धान्त प्रमाना ॥

हरिके नाम सबहि परतापी ❁ राम नाम कर अंशिक थापी ॥
रामचन्द्र के नाम अनूपा ❁ पार ब्रह्म आनंद स्वरूपा ॥
मंगल हूके मंगल कारक ❁ तारक महामंत्र उद्धारक ॥

दोहा—राम नाम परताप ते, सज्जन सुखद स्वरूप ।
राम धाम पथ पावहीं, महिमा अमित अनूप ॥ २ ॥

राम शब्द गुरू रूप समाना ❁ छत्र मुकुट विख्यात पुराना ॥
सरगुन निरगुन नामहि जानों ❁ गुप्त से गुप्त भेद पहिचानों ॥
देखे सुने गुने मन माहीं ❁ नामते परे सार कछु नाहीं ॥
सीता सहित राम को रूपा ❁ धरै ध्यान उर युगल स्वरूपा ॥
सो साकेत लोक अधिकारी ❁ कहैं शम्भु सुनु शैल कुमारी ॥
मरन काल जो सुमिरत नामा ❁ मंडल बेधि जात हरिधामा ॥

तीरथ व्रत नहिं नाम समाना ❁ नाम समान कर्म नहिं ज्ञाना ॥
योग यज्ञ तप साधन पूजा ❁ नाम समान त्याग नहिं दूजा ॥
कोटि ज्ञान विज्ञान समाधी ❁ राम नाम बिनु सबै उपाधी ॥
अस विचारि त्यागहु संदेहा ❁ राम नाम दृढ़ करहु सनेहा ॥

दोहा—राम नाम निरन्य किये, सन्त बेद मुनि पञ्च ।
जहाँ रामकोनाम नहिं, तहाँ कलह परपञ्च ॥ ३ ॥

नाम महातम सुनहु प्रवीना ❁ सकल नाम है राम अधीना ॥
सोहँ बीज और ओंकारा ❁ रेफ बिन्दु ते करहु बिचारा ॥
चन्द्राकार उपर अनुस्वारा ❁ ताते सिद्धि भई ओंकारा ॥
रमु बिनु ब्रह्म बह्न अस होई ❁ रा बिनु राघव कहै न कोई ॥
रा बिनु नारायन नायन अस ❁ म बिनु महादेव कहिये कस ॥

र बिनु कृष्ण कसन कहवावैं ❁ रा बिनु राधा धा ह्वोइ आवैं ॥
करि बिचार देखहु बुध कोई ❁ सबहि मंत्र महँ अच्छर दोई ॥
शास्त्र रूह गुरु बचन प्रमाना ❁ राम भजहु मन तजि अभिमाना ॥
छन्द—तजि काम क्रोध बिमत्त आलस लोभ मोह निवारिके ।
छल मल कुसङ्गति त्यागि सब दुरबासना सन मानिके ॥
सुचि अङ्ग गोमन जीति नाशा निरत नित नामहि रटै ।
ह्वैजाय सो नर रामहीं को रूप भव बन्धन कटै ॥ ४ ॥

॥ पुनः श्रीतुलसीदासजी कृत बालकाण्ड रामायण में प्रश्न ॥

दोहा—जो नृप तनय तो ब्रह्म किमि, नारि विरह मति भोरि ।
देखि चरित महिमा सुनत, भ्रमित बुद्धि अति मोरि ॥५॥

शशि भूषण अस हृदय विचारी ❁ हरहु नाथ मम मति भ्रम भारी ॥
प्रभु जे मुनि परमारथ वादी ❁ कहहिं राम कहँ ब्रह्म अनादी ॥
शेष शारदा वेद पुराना ❁ सकल करहिं रघुपति गुन गाना ॥
पुनि तुम राम नाम दिन राती ❁ सादर जपहु अनंग अराती ॥
राम सो अवध नृपति सुत सोई ❁ कि अज अगुन अलख गति कोई ॥
जो अनीह व्यापक बिभु कोऊ ❁ कहहु बुझाय नाथ मोहिं सोऊ ॥
अज्ञ जानि जनि रिसि उर धरहू ❁ जेहि विधि मोह मिटै सोइ करहू ॥
प्रश्न उमा के सहज सोहाये ❁ छल विहीन शिव के मन भाये ॥
हरहिय राम चरित सब आये ❁ प्रेम पुलकि लोचन जल छाये ॥
श्रीरघुबीर रूप उर आवा ❁ परमानंद अमित सुख पावा ॥

दोहा—मग्न ध्यान रस दण्डयुग, पुनि मन बाहर कीन्ह ।

रघुपति चरित महेश तब, हरखित बरनै लीन्ह ॥६॥
सोरठा—अस निज हृदय विचारि, तजि संशय भजु रामपद।
सुनु गिरिराज कुमार, भ्रम तम रवि कर बचन मम ॥७॥

सगुनहिं अगुनहिं नहिंकछु भेदा ❋ गावहिं मुनि पुरान बुध वेदा ॥
अगुन अरूप अलख अज जोई ❋ भक्त प्रेम बस सगुन सो होई ॥
जो गुन रहित सगुन सो कैसे ❋ जलहिम उपलबिलग नहिंजैसे ॥
जासु नाम भ्रम तिमिर पतङ्गा ❋ तेहिकिमि कहिये विमोहप्रसङ्गा ॥
राम सच्चिदानन्द दिनेशा ❋ नहिं तहँ मोह निशा लवलेशा ॥
सहज प्रकाश रूप भगवाना ❋ नहिं तहँ पुनि विज्ञान विहाना ॥
हरष विषाद ज्ञान अज्ञाना ❋ जीव धर्म अहमित अभिमाना ॥
राम ब्रह्म व्यापक जग जाना ❋ परमानन्द परेश पुराना ॥

दोहा—पुरुष प्रसिद्ध प्रकाशनिधि, प्रगट परावर नाथ।
रघुकुलमनिमम स्वामिसोइ, कहि शिवनायउ माथ॥८॥

एक अनीह अरूप अनामा ❁ अज सच्चिदानंद परधामा॥
व्यापक विश्व रूप भगवाना ❁ तेइ धरि देह चरित कृतनाना॥
सब कर परम प्रकाशक जोई ❁ राम अनादि अवधपति सोई॥
जगत प्रकाश प्रकाशक रामू ❁ मायाधीश ज्ञान गुन धामू॥
आदि अन्त कोउ जासु न पावा ❁ मतिअनुमान निगमअस गावा॥
पद बिनु चलै सुनै बिनु काना ❁ कर बिनु कर्म करै विधिनाना॥
आनन रहित सकल रस भोगी ❁ बिनु बानी वक्ता बड़ योगी॥
तन बिनु परस नयन बिनु देखा ❁ गहै घ्रान बिनु बास अशेषा॥
असमब भाँति अलौकिककरनी ❁ महिमा जासु जाइ नहिं बरनी॥

दोहा–जेहि इमि गावत वेद बुध, जाहि धरहिं मुनि ध्यान ।
सोइ दशरथ सुत भक्त हित, कौशलपति भगवान ॥६॥

अगुन अखंड अनंत अनादी ❁ जेहि चितवहिं परमारथवादी ॥
नेति नेति जेहि वेद निरूपा ❁ निजानन्द निरुपाधि अनूपा ॥
विष्णु बिरंचि शम्भु भगवाना ❁ उपजहिं जासु अंश ते नाना ॥
ऐसे प्रभु सेवक बस अहहीं ❁ भक्त हेतु लीला तनु गहहीं ॥
जो आनन्द सिन्धु सुखराशी ❁ सीकरते त्रिलोक प्रकाशी ॥
सो सुखधाम राम अस नामा ❁ सकल लोक दायक विश्रामा ॥
करहिं योग योगी जेहि लागी ❁ कोह मोह ममता मद त्यागी ॥
व्यापक ब्रह्म अलख अविनासी ❁ चिदानन्द निरगुन गुन रासी ॥
मन समेत जेहि जान न बानी ❁ तरकि न सकहिं वुद्धि अनुमानी ॥

महिमा निगम नेति करि कहही ❁ जो तिहुकाल एक रस रहही ॥

दोहा—सुनत लखत श्रुति नयन बिनु, रसना बिनु रस लेत ।
बास नाशिका बिनु लहै, परसत बिना निकेत ॥१०॥

सोरठा—अज अद्वैत अनाम, अलख रूप गुन रहित जो ।
मायापति सोइ राम, दास हेतु नर तन धरेउ ॥११॥

॥ पुनः उत्तरकाण्ड के उत्तरार्द्ध में काग भुसुण्डी सम्वाद ॥

जेहि माया सब जगहिं नचावा ❁ जासु चरित लखि काहु न पावा ॥
सोइ प्रभु भ्रू बिलास खग राजा ❁ नाच नटी इव सहित समाजा ॥
सोइ सच्चिदानन्द घन रामा ❁ अज विज्ञान रूप गुन धामा ॥
व्यापक व्याप्य अखंड अनन्ता ❁ अखिल अमोघ शक्ति भगवन्ता ॥
अगुन अदंभ गिरा गोतीता ❁ समदरशी अनवद्य अजीता ॥

निर मम निराकार निर मोहा ❁ नित्य निरंजन सुख संदोहा ॥
प्रकृति पार प्रभु सब उर बासी ❁ ब्रह्म निरीह विरज अविनासी ॥

दोहा—भक्त हेतु भगवान प्रभु, राम धरेउ तनु भूप ।
किये चरित पावन परम, प्राकृत नर अनुरूप ॥१२॥

राम चरित सत कोटि अपारा ❁ श्रुति शारदा न बरनहिं पारा
राम अनंत अनंत गुनानी ❁ जन्म कर्म अगिनित नामानी ॥
जलसींकर महिं रजगनि जाही ❁ रघुपतिचरित न बरनिसिराही ॥
विमल कथा सो हरिपद दायनि ❁ भक्ति होय सुनि के अनपायनि ॥
महिमा नाम रूप गुन गाथा ❁ सकल अमित अनन्त रघुनाथा ॥
निजनिजमतिमुनिहरिगुनगावहिं ❁ निगमशेष शिव पार न पावहिं ॥
तुमहिं आदिखग मशक प्रयंता ❁ नभ उड़ाहिं नहिं पावहिं अंता ॥

तिमि रघुपति महिमा अवगाहा * तात कबहुँ कोउ पावकि थाहा ॥
छन्द—अनुपम न उपमा राम सम नहिं आन निगमागम कहै ।
जिमि कोटिसत खद्योत रबिसम कहत अति लघुता लहै ॥१३
दोहा—राम अमित गुन सागर, थाह कि पावहिं कोइ ।
सन्तन सनजस कछुसुने, तुमहिं सुनायउँ सोइ ॥१४॥
सुनु कपीश अंगद लंकेशा * पावन पुरी रुचिर यह देशा ॥
यद्यपि सब बैकुंठ बखाना * बेद पुरान विदित जग जाना ॥
अवध सरिसप्रिय मोहिं न सोऊ * यह प्रसंग जानै कोउ कोऊ ॥
जन्म भूमि मम पुरी सोहावनि * उत्तर दिशि सरयू बह पावनि ॥
जो मंजहिं सो बिनहिं प्रयासा * मम समीप नर पावहिं बासा ॥
अति प्रिय मोहिं इहाँ के बासी * मम धामदा पुरी सुखरासी ॥

हरषे सब कपि सुनि प्रभु बानी ❁ धन्य अवध जेहि राम बखानी ॥
कवनिहुँ जनम अवध बस जोई ❁ राम परायन सो परि होई ॥
अवध प्रभाव जान तब प्रानी ❁ जब उर बसहिं राम धनुपानी ॥

॥ पुनः कबितावली रामायण के उत्तर में सवैया ॥

सियराम स्वरूप अगाध अनूप बिलोचन मीनन को जलु है।
श्रुतिराम कथा मुख रामको नामहिं ये पुनि रामहिं को थलु है ॥
मतिरामहिं सो गति रामहिं सो रति रामसो रामहिं को बलु है।
सब कौन कहै तुलसी के मते येतनो जग जीवन को फलु है॥१५॥
काम से रूप प्रताप दिनेशसे सोम से शील गनेश से माने ।
हरिचन्द्रसे दानी बड़ो बिधि से मघवा से महीप बिषय सुखसाने ॥

शुकते मुनि शारदते वक्ता चिरञ्जीवहि लोमशते अधिकाने ।
येतेभयो तो कहाँ तुलसी जो पै जानकी जीवन राम नजाने ॥१६॥
चारिउको छबको नवको दशआठको पाठकुपाठहि फास्यो ।
बाद बिबाद विषाद बढ़ाइके छाती पराइ औ आपन जास्यो ॥
स्वारथ को परमारथ को कलिकामद राम को नाम विसास्यो ।
कौन्हककहा पढिके निशिवासर बूझिन बेदको भेद विचास्यो ॥१७॥
आगम बेद पुरान बखानत कोटिन मारग जाहि न जाने ।
जेमुनिते पुनि आपुहि आपको ईश कहावत सिद्धि सयाने ॥
धर्म सबै कलिकाल ग्रसे जपयोग विराग लै जीव पराने ।

कोकरि सोच मरै तुलसी हम जानकीनाथ के हाथ बिकाने ॥१८॥

॥ पुनः श्रीनाभाजी कृत भक्तमाल में छप्पय ॥

जय जय मीन बराह कमठ नरहरि बलि बामन ।
परसुराम रघुबीर कृष्ण कीरति जग पावन ॥
बोध कलंकी व्यास पृथू हरिहन्स मनवन्तर ।
यज्ञरिषभ हय ग्रीव ध्रुव बरदे धनवन्तर ॥
बद्री पति दत्ता कपिलदेव सनकादि करुना करो ।
चौबिश रूप लीला रुचिर अग्रदास उर पद धरो ॥१९॥
अंकुश अम्बर कुलिश कमल जव ध्वजाधेनु पद ।

शंख चक्र स्वस्तीक जम्बु फल कलश सुधा हृद ॥
अर्धचन्द्र षट कोन मीन बिन्दु उर्ध रेषा।
अष्टकोन औ त्रिकोन इन्द्र धनु पुरुष विशेषा ॥
सीता पति पद नित बसत येते मंगल दायका।
चरण चिन्ह रघुबीर के संतन सदा सहायका ॥२०॥

कवित्त—संतन सहाय काज धरे नृपराज राम, चरण सरोजन में चिन्ह सुखदाइये ॥ मन है मतंग मतवारो हाथ आवै नहिं, ताके लिये अंकुश लै धारो उर धाइये ॥ शठता सतावै शीत तातेहि अम्बर धारे, हरेउ जन शोक ध्यान कीन्हें सुखदाइये ॥ ऐसेहि कुलिश पाप पर्वत के फोरबे को, भक्तिनिधि जोरबे को कंजमन

लाइये ॥२१॥ सुनो जव हेतु सदा दाता सिद्धि विद्याहि को, सुमति सुगति सुख संपति निवास है ॥ छिन में सभीत होत कलिकी कुचाल देखि, ध्वजासो विशेष जानो उभै सो विश्वास है ॥ गोपद सो होय भवसागर नागर नर, जोपै नयन हिये में लगावै मिटै त्रास है ॥ कपट कुचाल माया जाल सब जीतबे को, दरको दरस किये होत अन्यास है ॥२२॥ कामहु निशाचरको मारबेको चक्र धस्यो, मंगल कल्यान हेतु स्वस्तीकहु मानिये ॥ मंगलीक जम्बुफल फलहु को चारिफल, कामना अनेक विधि पूरे नित धाइये ॥ कलश सुधाको सर भरे हरि भक्ति रस, नयन पुटपान किये जीजे मन आनिये ॥ भक्ति को बढ़ावे औ घटावै तीन तापहू को, अर्ध चन्द्र धारनको कारन सो जानिये ॥२३॥ विषय भुजंग बालमीक तन

माहि बसै, दासको न डसै ताते जतन विजारेउ है ॥ अंष्ट कोण अरु त्रिकोन षष्ट कोन यंत्र किये, जीये जोइ जानि याको ध्यान उर करेउ है ॥ मीन बिन्दु रामचन्द्र कीन्हें बशिकरन पाय, ताहिते निकाय जन मन जात हरेउ है ॥ संसार सागर को पारावार पावै नहिं, अर्ध चन्द्र दासन को सेतु बन्ध करेउ है ॥२४॥ धनुपद माहिं धरे हरेउ शोक ध्यानिन को, मानिन को मारेमान रावन आदि साखिये ॥ पुरुष विशेष पद कमल बसाये राम, हेतु सुनो अभिराम श्याम अभिलाखिये ॥ सूधो मन सूधो बैन सूधो करतूति सब, ऐसो जन होय मेरो याहि को जुराखिये ॥ जोपै बुधिवन्त रस-वन्त गुन सम्पति में, करि हिया ध्यान हरिनाम मुख भाखिये ॥२५॥ श्रद्धाइ फुलेल औ उपटनों श्रवन कथा, मैल अभिमान अंग अंगनी

छोड़ाइये ॥ मनन सुनीर अन्हवाय अंगुछाय दया, नवन बसन प्रन सौचौ सो लगाइये ॥ अभरन नाम हरि साधू सेवा करन फूल, मनसी सुनथ संग अंजन बनाइये ॥ भक्ति महारानी की श्रृङ्गार चारु बीरी चाह, रहै जो निहारि लहै लाल प्यारी गाइये ॥२६॥ भक्तितरु पौधाताहि बिघ्न डर छेड़िहुको, बारदै बिचार वारि सींचो सतसंगसो ॥ लगोई बढ़न गोदा चहुँदिशि कढ़न सो, चढ़न आकाश जस फैल्यो बहु रंग सो ॥ संत उर आल वाल शोभित बिशाल छाया, जीये जीव जाल ताप गयो यों प्रसंगसो ॥ देखो बढ़ बारि जाहि अजहु की शंका होति, ताहि पेड़ बाँधे झूले हाथो जीते जंगसो ॥ २७ ॥ जाको जो स्वरूप सो अनूप लै देखाइ दियो, कियो जो कवित्त पट मिहि मध्य लाल है ॥ गुहपै अपार साधु कहे अंक

चारिही में, अर्थ बिसतार कबिराज टकशाल है ॥ सुनि संत सभा झूमि रही अलि श्रेणी मानो, घूमि रही कहे यह कहा धौ रसाल है ॥ सुने है अगर अब जाने मै अगर सही, चोवा भये नाभा औ सुगंध भक्तमाल है ॥२८॥

छप्पय—बिधि नारद शंकर सनकादिक, कपिल देव मनुभूप ॥ नर हरिदास जनक बलि भीष्म, शुकमुनि धर्म स्वरूप ॥ अन्तरंग अनुचर हरि जूके, जो इनको जस गावै ॥ आदि अन्तलो मंगल तिनको, श्रोता वक्ता पावै ॥ नींमादित्य सनकादि हैं, बिष्णु स्वामि त्रिपुरारि ॥ श्रीपति रामानंद बिधि, माधव गुरु मुख चारि ॥२६॥

॥ पुनः श्रीरघुनाथ दास जी कृत विश्राम सागर में ॥

दोहा—बेदसार सिद्धान्त मत, तत्व भेद बिस्तार।

मन बुधि चित हंकार की, कहिहौं बृत्ति विचार ॥३०॥

दुःख सुख भय संकल्प बिकल्पा ❁ लाज उच्चाटन मन बृत्तिथल्पा ॥
ज्ञान बिचार शील बिश्वासा ❁ धीरज निश्चय बुधि बृत्ति भाषा ॥
सुरति चपला अग्नि उमंगा ❁ राग आदि चित बृत्ति प्रसंगा ॥
मै तै मान मलिनता दोषा ❁ अहंकार की बृत्ति सरोषा ॥
यहि विधि अन्तः करन बिचारा ❁ भिन्न भिन्न सुभाव बिसतारा ॥
प्राण पवन हृदय महँ बासा ❁ जेहिते निशिदिन निकसत श्वासा
गुदा अपान नाभि समाना ❁ कंठ उदान सर्व तनु व्याना ॥
नाग बायु ते उठय ढेकारा ❁ कूर्म नयन जो पलक उघारा ॥
देवदत्त आवत जमुहाई ❁ किलकिल छींक लगावत भाई ॥
मुये धंनञ्जय देह फुलावै ❁ यह दश पवन शरीर रहावै ॥

छन्द——मन के देव चन्द्र बुधि ब्रह्मा बासुदेव चिंत करे।
अहंकार शिव दिशा करनके नयन भानु सुरहेरे॥
मुखके अग्नि इन्द्र हाथनके देव गुदा जम मानो।
रसना बरुन त्वचाके मारुत नाशा आश्विनि जानो॥
लिंगदेव परजापति सिरजत चरनहिं विष्णु बिराजै।
चौदह देव रहत घट भीतर नित निरभय ह्वै गाजै॥३१॥

मुख ते कहत श्रवन ते सुनई ❁ त्वचा पानि असपरस्यै गुनई॥
नयन चरन दोउ प्रीति रहावै ❁ नयन फसै तब पग पहुँचावै॥
रसना उपस्थ भोग दोउ चाहा ❁ गुदा नाशिका नेह निबाहा॥
मन इन इन्द्रिन के सुख पागी ❁ भूलेसि ब्रह्म क्रांति सब भागी॥

तातें भयो दीन मति हीना ❁ मन बासा अब सुनहु प्रवीना ॥
नाभी मध्य कमल एक रहई ❁ पाखुरि आठ केरि सो अहई ॥
जेहि दल पर बैठत मन जाई ❁ तहँ पर तैसी वृत्ति लखाई ॥
पूरब दल पर जब मन जावै ❁ दया धर्म धीरज उपजावै ॥
अग्नि कोन पर महि पग धरतै ❁ क्षुधा तृषा निन्द्रालस बरतै ॥
दक्षिण दल मद मत्सर छोहा ❁ अहंकार उपजै अति कोहा ॥
नैरित दले माहि हठ माया ❁ आशा तृष्णा शंक गनाया ॥
पश्चिम दल समता उपजावै ❁ आनँद निरभय चित्त रहावै ॥
वायव उच्चाटन संतापा ❁ भय लज्जा बरतै उर पापा ॥
उत्तर दलपर जब मन तिष्ठा ❁ हँसी बिनोद काम की चिष्ठा ॥
ईशाने सुधि वुधि संतोषा ❁ क्षमाशील सत बिरति अदोषा ॥

मन आठों पाखुरि पर धावत ❁ पवन समान बार नहि लावत ॥
तेहि मनको रोकत कोइ संता ❁ पकड़ि लगावत चरन अनन्ता ॥
नाहित जगत सिंधु के माहीं ❁ जनमत मरत कतहुँ सुख नाहीं ॥
तनकी चारि अवस्था कुरिया ❁ जाग्रत स्वप्न सुषोप्ती तुरिया ॥
जाग्रत को चक्षुन में बासा ❁ स्वप्नदेह करै कंठ निवासा ॥
कारन तनु हृदया महँ राजै ❁ तुरिया ऽवस्था गगन बिराजै ॥
परमात्मा ध्यान उर आवै ❁ तुरिया अवस्था सोइ कहावै ॥
कोइ कोइ सन्त लहत है याको ❁ लक्षन सुनहु बताओं ताको ॥
प्रेम बिबस तनु की सुधि भूली ❁ गद गद कण्ठ रोम रहै फ़ूली ॥
बोलत बचन और कै औरा ❁ समुझि परतमानहु मतिबौरा ॥
दोष अदोष मिटा भ्रम काई ❁ निज स्वरूप सुख रहै समाई ॥

समचित अहङ्कार नहिं आवै ❁ बुधि पहुँचतपहुँचत नसि जावै ॥
दोहा—मुक्ति आदि इच्छा नहीं, निस्पृह परम सुजान ।
आतमसुखनितत्रिपतिजे,तेहिसमाननहिंआन ।३२॥
सोइ ज्ञानी ध्यानी गुनी, दया सूर बुधिमान ।
अति पवित्र रघुनाथ सोइ, जो सुमिरै भगवान ॥३३॥

॥ पुनः श्रीकबीरदासजी कृत ज्ञान गुदरी चौपाई ॥

अलखपुरुष जब किया विचारा ❁ लख चौरासी धागा डारा ॥
पांच तत्व की गुदरी बीना ❁ तीन गुनन ते ठाढ़े कीना ॥
तामे ब्रह्म जीव अरु माया ❁ समरथ ऐसा खेल बनाया ॥
जीवन पांच पचीस सो लागा ❁ काम क्रोध ममता मद पागा ॥

काया गुदरी कर बिसतारा ❁ देखहु संतो अगम सिंगारा ॥
चाँद सूर्य दोउ पेवन लागे ❁ गुरु प्रतापते सोवत जागे ॥
शब्द कि सुई सुरति कर धागा ❁ ज्ञान टोप सो सीवन लागा ॥
अब गुदरी की कर हुसिआरी ❁ दाग न लागै देखु विचारी ॥
सुमति की साबुन सिरजन धोई ❁ कुमति मैल डारो सब खोई ॥
जिन गुदरी कर किया बिचारा ❁ तिनको मिलिगो सिर्जन हारा ॥
धीरज धुनी ध्यान को आसन ❁ जितको पीन सत्य सिंहासन ॥
युक्ति कमंडल कर गहि लीन्हा ❁ प्रेम पावड़ी मुरसिद चीन्हा ॥
सेली शील बिवेक कि माला ❁ दया की टोपी तन धर्मशाला ॥
मेहर मतंगा मति बैसाखी ❁ मृगछाला मनही को राखी ॥
निहचै धोती पवन जनेऊ ❁ अजपा जपै सो जानै भेऊ ॥

रहै निरंतर सत गुरु दाया ❁ साधुसंग करिके सब पाया ॥
लवकर लकुटी हृदया जोरी ❁ त्तमा खराऊँ पहिरि बहोरी ॥
मुक्ति मेखला सूरति श्रवनी ❁ प्रेम पियाला पीवहि मौनी ॥
उदासी कुबरी कलह निवारी ❁ ममता कुत्ती को ललकारी ॥
युक्ति जंजीर बांधि जब लीन्हा ❁ अगम अगोचरखिरकी चीन्हा ॥
बैराग त्यागि बिज्ञान निधाना ❁ तत्व तिलक निर्भय निरबाना ॥
गुरुगम चकमक मनसा तूला ❁ ब्रह्म अग्नि परगट कर मूला ॥
संशय शोक सकल भ्रम जारा ❁ पाँच पचीस को परगट मारा ॥
दिलकर दरपन दुविधा खोई ❁ सो बैरागी पक्का होई ॥
सुन्य महल में फेरी देई ❁ अमृत रस को भित्ता लेई ॥
दुःख सुख मेला जग के भाऊ ❁ तरबेनी के घाट नहाऊ ॥

तन मन सोधि रहै गल ताना ❁ सो लखि पावै पद निरबाना ॥
अष्ट कमल दल चक्रहि सोधै ❁ योगी आप आप में बोधै ॥
इंगला पिंगला के घर जाई ❁ सुखमन सुरति रहै लवलाई ॥
ओहं सोहं तत्त्व विचारा ❁ बंकनाल में किया सम्भारा ॥
मनको मारि गगन चढ़िजाई ❁ मानसरोवर पैठि नहाई ॥
छुटिगै कशमल आप अलेखा ❁ इहि नयनन साहेब को देखा ॥
अहंकार अभिमान बिडारा ❁ घटकर चौका करि उजियारा ॥
चितकर चन्दन तुलसी फूला ❁ हितकर सम्पुट करिले मूला ॥
श्रद्धा चँवर प्रीति कर धूपा ❁ नौतम नाम साहेब को रूपा ॥
गुदरी पहिरें आप अलेखा ❁ जिन यह प्रगट चलायउ भेखा ॥
ज्ञान गुदरि को पढै प्रभाता ❁ जन्म जन्म को संशय जाता ॥

ज्ञान गुदरि को पढ़ै मध्याना ❁ सो लखि पावे पद निरबाना ॥
सन्ध्या सुमिरन जोनर करहीं ❁ कहैं कबीर भवसागर तरहीं ॥

॥ पुनः श्रीप्रागदास जी कृत अनुभव प्रकाश ॥

कवित्त—कौनके देश में शब्द सागर भरा, कौनके देश में लहर लागी ॥ कौनके देश मन भवर स्थान है, कौनके देश में सुरति जागी ॥ कौनके देश में तूरिया तूल भई, कौनके देशमें शब्द बाजी ॥ कौनके देश में सन्त मोती झरै, कौनके देश चुनि हंस राजी ॥३४॥ मूल के देश में शब्द सागर भरा, त्रिकुटी के मध्य लहर लागी ॥ कञ्जके पात्र मन भँवर अस्थान है, ध्यान के देश में सुरति जागी ॥ शेष के शीश पर तूरिया तूल भई, सुन्यके देश में शब्द बाजी ॥ खण्ड अखण्ड में प्राग मोती झरै, सत्य के लोक चुनि हंस राजी ॥३५॥

॥ पुनः श्रीबेदार्थ रामायण महाबीर दास जी कृत चौपाई ॥

रेफ अखण्ड अनन्त अनूपा ❁ पार ब्रह्म सोइ राम स्वरूपा ॥
अनुस्वार कारन सोइ सीता ❁ आदि शक्ति हरि भक्ति पुनीता॥
बरण अकार स्वरूप प्रमाना ❁ भरत प्राज्ञ अस वेद बखाना ॥
विश्वरूप सेवक अधिकारी ❁ लखन उकार सरूप सुखारी ॥
तै जस बरण मकार स्वरूपा ❁ नाम शत्रुहन बेद निरूपा ॥
रहित बिकार मोह मद माना ❁ सहज बिराग रूप हनुमाना ॥
बेद नृपति दशरथ को रूपा ❁ तीनि शक्ति भइ नारि स्वरूपा ॥
केकइ कर्म उपास्य सुमित्रा ❁ कौशिल्या है ज्ञान पवित्रा ॥
अष्ट कमल दल परम उदारा ❁ लीला धाम अवध विस्तारा ॥
पुनि अज्ञान समुझ जिय रावन ❁ कुंभकरन हङ्कार अपावन ॥

जीव बिभीषन भक्ति दृढ़ाई ❁ जानि अनेति त्यागि दोउ भाई ॥
कर्म इन्द्रिय सुर विषय सप्रीता ❁ प्रबल उदार मार इन्द्रजीता ॥
अस घननाद जासु उर नासा ❁ सुरति त्रिया पहुँची प्रभु पासा ॥
पाइ शीश पति सुगति बिचारी ❁ सुरति ब्रह्म लय देह बिसारी ॥
बिषय वृत्ति लङ्का पुर गावा ❁ नारि अविद्या रूप सोहावा ॥
अस रावन कुल चरित अपारा ❁ सुनहु ज्ञान विज्ञान बिचारा ॥
सात भूमिका सातहुँ दीपा ❁ सप्त धातु तन सप्त दधीपा ॥
नव इन्द्रिय प्रत्यक्ष बखाने ❁ नवो खण्ड ताको पहिचानो ॥
कर्म ज्ञान अरु अन्तः करना ❁ तेइ दश चारि भुवन श्रुतिबरना ॥
चरन रसातल कटि मृतुलोका ❁ त्रिकुटी तकि जानहु सुरलोका ॥
तीन हाथ तिहुलोकहि जानू ❁ है ललाट बैकुण्ठ महानू ॥

ता ऊपर है लोक सकेता ❁ ता कहँ कोइ सन्त जन चेता ॥
अग्निपवन रबिशशि महिं भाषा ❁ तहँ पर केवल नाम प्रकाशा ॥
ता सुखको कहि सकत न बानी ❁ जिमि गूँगा गुड़ स्वाद बखानी ॥
यहि विधि तोतर बचन बिचारी ❁ लेहु सुधारि संत उपकारी ॥
तत्व विचार जान योगी सिधि ❁ कहैं महाबिरदास कौन विधि ॥

छप्पय—एक बेद के चारि सहस शाखा बिस्तारी।
साठि लाख इतिहास महा भारत किये भारी ॥
चारि लाख बेदान्त सूत्र दुइ लाख बखाने ।
अष्टादश पुरान कीन्हें हरिनाम हृदय नहिं जाने ॥
कहत सुनत समुझत नित दाह हृदयते नागयो।

तत्ववेत्ता नारदमिले ब्यासहृदय शीतलभयो ॥३६॥
कर्म मिमांसा कहै देह बश करै सो पावै ।
न्याय कहै करतार बैसखो समय बतावै ॥
नित्या नित्य बिचार शाख्य मत ऐसो गावै ।
पातांजली हठ योग ज्योति अष्टांग देखावै ॥
सबमें व्यापक ब्रह्म बेदान्त ब्यास ऐसो कहैं ।
यहिबिधिशास्त्र बिचारपरस्पर हरिनिहचै कैसेलहैं ॥३७॥
ब्रह्म बिष्णु शिव लिङ्ग पद्म अस्कंद पसारा ।
बामन मीन बराह ब्रह्म बैवर्तक सारा ॥

नारद गरुड़ भविष्य कूर्म अरु अग्नि उदारा ।
मारकाण्ड ब्रह्माण्ड भागवत अगम अपारा ॥३८॥
दोहा—चारि वेद षट शास्त्रपुनि, अष्टादश मत जोय ।
सबका सार बिचार है, राम कृपा जब होय ॥३९॥
प्रथमजो अन्तः करनमें, त्रिबिध दोष मुनिगाय ।
मलविक्षेपअवर्णता, सुनियजवनविधिजाय ॥४०॥

वार्तिक

प्रथम अधिकारी पुरुष श्रद्धा पूर्वक सतगुरु के पास जाइके वेद वेदान्त वाक्य को श्रवन करै तब अन्तः करन के संदेह मल रहित होता है। पुनः मनन करने से असंभावना बिक्षेप दोषते रहित शुद्ध उपासन होता है। पुनः निध्यासन करने से साधन की पुस्टता बिपरीत भावनाते शून्य अज्ञान रहित होता है। याते कर्म करने से पाप छीन होते सात्विक धर्म में रुचि होता है। तब उपासना करने से चित्त की एकाग्रता रूपयोग प्राप्त होता है। ताते

देहाभिमान रहित शुद्ध ज्ञान द्वारा अधिकारी पुरुष चतुर्थ साधन योग्य होता है। साधन काको कहीं विबेक १ बैराग्य २ समादि षट संपती ३ मुमुक्षता ४ पुनः बिबेक कही नित्या नित्य बस्तु को जानै यथा आतमा नित्य अविनाशी है शरीर नाशमान अनित्य है। पुनः बैराग्य कही लोक परलोक सुखकी इच्छा रहित। पुनः समादि षट संपती कही समदम उपराम तितिक्षा श्रद्धा समाधान ६। सम कही मनको रोकना, दम कही पञ्चइन्द्रियां निग्रह, उपराम कही उदासीनता, तितिक्षा कही सुखदुख समान, श्रद्धा कही बेद वाक्य गुरु बचन विश्वास, समाधान कही चित्ताकी एकाग्रता शांति प्राप्त। पुनः मुमुक्षता कही दुख की निवृती सुख की प्राप्ती द्वारा सम सन्तोष दया बिबेक बिचार प्रवेशते सम्पन्न ज्ञान होता है। यथा

परम पुरुष परमात्मा के स्वइच्छा अनुसार जगत की उत्पत्ति कारन त्रिगुणी महामाया मूल प्रकृत्ती प्रगट भई, जाते आकाश भयो, आकाशते बायु भयो,बायु ते अग्नि भयो,अग्नि ते जल भयो, जल ते पृथ्वी भयो। पुनः पञ्च मात्रा भयो, शब्द अस्पर्श रूप रस गन्ध अर्थात् श्रोत त्वचा चक्षु रसना घ्राण, जिसको ज्ञान इन्द्रिया कहते हैं। पुनः पाँच पाँच प्रकृती भई यथा। अकाश ते शोक काम क्रोध लोभ मोह भयो। पुनः बायु ते पसरना दौरना बल करना चलना सकुरना भयो। पुनः अग्नि ते निद्रा तृषा क्षुधा आलस जमुहाई भयो। पुनः जल ते लार वीर्य पसीना मूत्र रक्त भयो। पुनः पृथ्वी ते रोम त्वचा नाड़ी माँस हड्डी भयो। सब मिलिके पचीस प्रकृती भयो। पुनः सतोगुण ते बिष्णु चौदह देवता भयो। पुनः रजोगुण

ते ब्रह्मा चौदह इन्द्रिया भयो। पुनः तमोगुण ते शिव चौदह विषय भयो। अध्यातम अधिदैव अधिभूत भयो। यथा मन इन्द्रिया को देवता चन्द्रमा विषय संकल्प है। पुनः बुधि इन्द्रिया को देवता ब्रह्मा विषय निश्चय है। पुनः चित इन्द्रिया को देवता बासुदेव विषय चिंतवन है। पुनः हंकार इन्द्रिया को देवता शिव विषय अहंपना है। पुनः कान इन्द्रिया को देवता दिशा बिषय शब्द ग्रहन है। पुनः त्वचा इन्द्रिया को देवता बायु विषय असपर्स है। पुनः नेत्र इन्द्रिया को देवता सूरज बिषय रूप है। पुनः नाशिका इन्द्रिया को देवता अश्विनी कुमार बिषय गंध है। पुनः रसना इन्द्रिया को देवता बरुन बिषय रस है। पुनः मुख इन्द्रिया को देवता अग्नि बिषय बचन है। पुनः हाथ इन्द्रिया को देवता इन्द्र बिषय

बस्तु गृहन है। पुनः लिंग इन्द्रिया को देवता प्रजापति बिषय रति भोग है। पुनः गुदा इन्द्रिया को देवता यमराज बिषय मल त्याग है। पुनः चरन इन्द्रिया को देवता बिष्णु बिषय गमन है। इसको त्रिपुटी ब्यालिस तत्व कहते हैं। पुनः रजोगुन ते पाँच कर्म इन्द्रिया पाँच प्राण बायु भयो। पुनः सतोगुनते पाँच ज्ञान इन्द्रिया चारि अन्तः करन भयो। पुनः तमो गुनते पाँच महाभूतों की मात्रा भयो। इसको चौबिश तत्व कारन शरीर कहते हैं। पुनः पाँच ज्ञान इन्द्रिया पाँच कर्म इन्द्रिया पाँच प्राण बायु मन बुद्धि मिलिके सत्रह तत्व सूक्ष्म शरीर कहते हैं। पुनः पाँच तत्व तीनि गुन पचीस प्रकृती बिश्व अभिमानी मिलिके चौतीस तत्व अस्थूल शरीर कहते हैं। पुनः तीनि अवस्था विषेश छछ भेद है जैसे देवता शक्ती भोग

गुन बानी अस्थान यथा जागृत अवस्था माने कचहरी अस्थान नेत्र बैखरी बानी रजोगुन बिश्व देवता प्रकृती भोग क्रिया शक्ती है। पुनः स्वप्न अवस्था माने होटल स्थान कंठ मध्यमा बानी सतोगुन तैजस देवता बासनाभोग सूक्ष्म शक्ती है। पुनः सुषोप्ती अवस्था माने गाढ़ निद्रा स्थान हृदय पश्यतिबानी तमोगुन प्राज्ञ देवता आनन्द भोग दिव्य शक्ती है। पुनः अस्थूल सूक्ष्म कारन शरीर रहित त्रय अवस्था साक्षी पञ्चकोशातीत शुद्ध चैतन्य अविद्या शून्य सच्चिदानन्द स्वरूप दृढ़ आतमा कहते हैं। इस प्रकार बेदान्त बाक्य सतगुरू उपदेशते आतमा बित पुरुष सदा जीवन मुक्त है।

॥ पुनः श्रीगोकुलदास जी कृत आत्मयोग प्रकाश ॥

सतगुरु शब्द बिचारहु भाई ❁ पाँच तत्व की कथा बनाई ॥

तीनि गुनन को करि बिंस्तारा ❁ अवधू यामें करहु बिचारा ॥

दोहा—अष्ट अङ्गसो भेद लखि, षट चक्रन को सार ।
यहि विधि धारै धारना, छूटै सकल विकार ॥४१॥
अष्ट क्रिया को शुद्ध करि, आसन विविध प्रकार ।
मारै कपाली साधि कें, आसन पद्ममहिं धार ॥४२॥
यम संयम दृढ़ धारिये, क्षमा शील सन्तोष ।
भली बुरी सबकी सहै, तन नहिं पावै दोष ।४३॥
जित इन्द्रिय आसन अचल, रहै आतमा लीन।
योगी भूजै बासना, सुनहु सन्त परबीन ॥४४॥
अधार चक्रको भेद सुनि, गननायक को बास ।
रिद्धिसिद्धि सनमुख खड़ी, सकल बुद्धि परकास ॥४५॥

दूजे स्वाधिष्ठान पुनि, ब्रह्मा सुरपति बास।
सुरक्रीड़ा तामे लखी, मदन रूप परकास ॥४६॥
शिव शक्ती को बास करि, हृदय अनहद भाय।
ध्यानी धारै धारना, शब्द रूप होइ जाय ॥४७॥
पंचम चक्र विशुद्ध सुनु, जहँ परणवको बास।
षोड़स दल के बीच में, जीव करत परकास ॥४८॥
छठवाँ आज्ञा जानिये, ज्योति रूप उजियार।
त्रिवेनी के बीच में, भँवर गुफा को द्वार ॥४९॥
सहस कमलदल उर्ध मुख, तहँ सुख मनको बास।
सतगुरु के परताप ते, अमित भानु परकास ॥५०॥
मूल द्वारको बन्द करि, आसन सिद्धि लगाय।

कायाको सुधि राखिके, ध्यान उनमुनी लाय ॥५१॥
इँगला पिंगला है नहीं सुख मन जहाँ समाय ।
कुंभक सुख मन साथ करि, ऊपर पहुँची जाय ।
जैसे गंगा सकल मिलि, गइ सागर की धार ।
सकल नीर एकै भयो, कौन करै निरुवार ॥५२॥
तैसे ध्यानीं ध्यान में, मिल्यो ब्रह्म सो जाय ।
नाम रूप एकै भयो को चीन्है बिलगाय ॥५३॥
अलखजाय अलखै मिल्यो, अलख २ भयो ध्यान ।
बेद पुरान बरनन करै, सुनिये आतम ज्ञान ॥५४॥
आतम तत्व बिचारिके, भये आतमा रूप ।
गोकुलदास बरनन करै, सुनहु सन्त सुरभूप ॥५५॥

मङ्गल अरु एतवार पुनि, बार शनीचर लीन ।
शुभकारज को मिलत है, सूरज के दिन तीन ॥५६॥
दहिने स्वर में जो चलै, दहिने पग धरि तीन ।
बाये स्वर में चारि पग, सुनिये परम प्रवीन ॥५७॥
दहिने स्वर में जाइये, उत्तर पूरब देश ।
दक्षिण पश्चिम जो चलै, बाये स्वर परवेश ॥५८॥
उतरायन सूरज लखै, शुक्ल पक्ष के माहि ।
योगी काया छोड़िये, यामे संशय नाहिं ॥५९॥
सकलशास्त्र निरुवार यह, सुनिये परम बिचार ।
कठिन पाप जिव मारना, कठिन पुन्य उपकार ॥६०॥
राम सार संगृह विमल, पढ़े जो मन चितलाय ।
निश्चय नाम उपासना, ज्ञान बोध फल पाय ॥६१॥

संबत् वोनइस सै सत्तासी, कातिक सित गुरुवार ।
रामघाट श्रीअवध में, पूरन संगृह सार ॥६२॥
जिला जौनपुर जानिये, पोस्ट नेवढ़िया खास ।
कूर्म बंश में जन्म है, नाम महाबिरदास ॥६३॥

इति श्री अयोध्या बड़ी छावनी के समाश्रे श्री १०८ श्रीईश्वरदास जी महाराजजी के शिष्य महावीरदासजी कृत समाप्त ।

श्लोक—गोकोटिदानं गृहणेषु काशी, प्रयाग गंगायुत कल्पवासी ।
यज्ञायुतो मेरु स्वबर्ण दानं, गोविन्द नाम स्मरणान तुल्यं ॥
तदैव लग्नं सुदिनं तदैव, ताराबलं चन्द्र बलं तदैव ।
विद्याबलं देव बलंतदैव, सीतापतिर्नामयदा स्मरामि ॥
बेद: प्रमाणं स्मृतयो प्रमाणां, नेको मुनिर्यस्य बच: प्रमाणां ।
धर्मस्य तत्वा निहता गुहायां, महा जने जेन गता सपन्था ॥

हरि ॐ शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!! ॥



मुद्रक—

महावीर प्रसाद,

नेशनल प्रेस, बनारस कैण्ट ।



